श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के ९वें दीक्षान्त समारोह में माननीय राज्यपाल श्री ओ०पी० कोहली जी का अभिभाषण (2 फरवरी, 2017)

- मैं प्रारंभ में उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देना चाहूँगा जिन्होंने आज यहाँ पदवी प्राप्त की हैं और जिन्हें पदक प्राप्त हुए हैं। यह श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय का ९वां पदवीदान समारोह है। इस पदवीदान समारोह में आपने भारत के संस्कृत के विशिष्ठ विद्वानों श्री वशिष्ठ त्रिपाठी जी और श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी का अभिवादन किया है। मैं भी अपने आपको उस अभिवादन के साथ जोड़ता हूँ।
- प्राय: लोग यह चिंता करते हुए पाए जाते हैं कि संस्कृत की रक्षा कैसे हो । मेरी दृष्टि से यह प्रश्न गौण है । सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा और साहित्य में निहित ज्ञान एवं विज्ञान का ‘‘सर्वजन हिताय’’ और ‘‘ सर्वजन सुखाय’’ की दृष्टि से

किस प्रकार से उपयोग करें । वास्तव में संस्कृत भाषा और साहित्य किसी एक देश की भाषा या माध्यम नहीं है। यह तो ऋषियों की तपस्या के माध्यम से शाश्वत प्रकृति के नियमों और विश्व मानवतावाद का बोध करानेवाली भाषा है जिनके बताये मार्ग पर चलना पूरे विश्व का कर्तव्य है। इसके संदर्भ में हमें आर्यों का इतिहास देखना पड़ेगा, तभी हमें ''यत्र विश्वम् भवति एक नीडम्'' की भावना को हम विश्व के परिप्रेक्ष्य में समझ पाएँगे। उपर्युक्त अवधारणा को जैनदर्शन एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन से हम भलिभाँति समझ सकते हैं। इस दृष्टि से संस्कृत भाषा और साहित्य का विश्व साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

- जहाँ तक आज की वैश्विक समस्याओं के समाधान का संदर्भ है तथा भारत की शक्ति और समृद्धि के संबंध का प्रश्न है, उसमें संस्कृत भाषा एवं साहित्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है। आज की प्रमुख समस्याओं में आतंकवाद, पर्यावरण तथा समाज में जीवनमूल्यों का ह्रास–यह तीन समस्याएँ प्रमुख हैं। मेरा यह

मानना है कि मानव जीवन केवल रोटी, कपड़ा और मकान की आपूर्ति की बात से समृद्ध और पूर्ण नही हो सकता, जब तक आंतरिक संस्कृति से हटकर साहित्य में गर्भित मानवजीवन के मूल्य को लेकर वह आगे ना बढ़े । मूल्यों को नहीं पहचानने या उनपर ध्यान नहीं देने के कारण आज विश्व कई समस्याओं से जूझ रहा है। मेरा यह मानना है कि इन सभी समस्याओं का समाधान हमें संस्कृत भाषा और साहित्य से प्राप्त हो सकता है। इसके लिए ज़रूरत है इन विषयों पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने की। ज़रूरत है हमारे वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में आधुनिक समाज के कल्याण और समृद्धि की दृष्टि से समुचित शोध कार्य करने की । इसी संदर्भ में पर्यावरण शुद्धि, स्वच्छता तथा ग्लोबल वार्मिंग का भी उल्लेख करना उचित होगा। माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी एक अभियान के रूप में केन्द्र सरकार की नीतियों में इन्हें स्थान दिया है। इन सभी समस्याओं का समाधान पूर्णरूप से संस्कृत भाषा और साहित्य में उपलbध है।

ज़रूरत है उन समाधान के तत्वों के समग्र वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में अवलोकन करने की। प्रकृति के संकेतों को कवियों ने समझकर स्मृतियों का जो संपादन किया है, उनका ठीक–ठीक आकलन करना तथा तद्नुसार भारतीय जीवन की पद्धति को अपनाना आज की परम आवश्यकता है। उदाहरण के तौर पर हम ऋग्वेद के पृथ्वी सूक्त, नदी सूक्त एवं अन्य संबंधित सूक्तों को ले सकते हैं, जिनमें जल इत्यादि को स्वच्छ करने तथा संबंधित विषयों पर विशेष बल दिया गया है। इन सूक्तों में जहाँ एक ओर नदियों के प्राकृतिक प्रवाह का अवरोध करने का हमें संदेश मिलता है, वहाँ कृषि कार्यों के लिए नदियों की उपयोगिता के बारे में भी हमें उपयुक्त ज्ञान प्राप्त होता है। इसी प्रकार पृथ्वी सूक्त में स्थित राष्ट्रीय भावनाओं को विस्तार से समझा जा सकता है। आर्थिक उन्नति के लिए प्राकृतिक संसाधनों को अप्राकृतिक औद्योगिकीकरण से पर्यावरण को जो क्षति हुई है, उसके चलते मानव समाज के मन एवं मस्तिष्क पर दुष्प्रभाव पड़ने के कारण समाज में

अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। इन सभी विषयों पर संस्कृत के विद्वानों एवं शोधकर्त्ताओं द्वारा अगर गुणवत्तापूर्वक शोधकार्य किया जाए तो मैं समझता हूँ कि हमारे समाज की बहुत सी समस्याएँ समाप्त हो सकती हैं। इन सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखकर जब मैं इस विश्वविद्यालय के कार्यों का अवलोकन और मूल्यांकन करता हूँ तो मुझे संतोष होता हे कि यह विश्वविद्यालय यद्यपि नया है फिर भी अपनी क्षमता के अनुसार गुजरात सरकार की मदद से लगातार प्रगति कर रहा है।

- किसी भी विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह एक शैक्षणिक उत्सव के साथ–साथ उसकी उपलब्धियों को स्थापित करने तथा उनके आधार पर आगे की कार्य योजना बनाने के अवसर भी प्रदान करता हैं। तद्नुसार श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय अपनी परम्परा के आलोक में भारत के प्रसिद्ध विद्वानों को उनके विशिष्ठ कार्यों के लिए डी०लिट० की पदवी से सम्मानित करता है, जिन्होंने भारतीय प्राचीन शैक्षणिक परंपरा को तथा

भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इसी प्रकार विश्वविद्यालय ने अपनी शैक्षणिक गतिविधियों से इस सत्र में ''तन्मे मनः शिव संकल्पम् अस्तुः'' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार को राज्य सरकार के आर्थिक सहयोग से सम्पन्न किया है, जिसके लिए मैं विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय, कुलसचिव महोदय, अध्यापकों, छात्रा एवं छात्राओं को बधाई देता हूँ।

- इसी क्रम में विश्वविद्यालय शैक्षणिक गुणवत्ता वृद्धि के लिए शास्त्र चर्चा कार्यक्रम कर रहा है जो एक सराहनीय कदम है। विश्वविद्यालय की विशेष उल्लेखनीय शैक्षणिक गतिविधियों में पी० जी० डी० सी० ए० का पाठ्यक्रम है जिसमें संस्कृत भाषा का विशिष्ट रूप से समावेश किया गया है, जिसके चलते छात्रों को अनुवाद करने में कुशलता प्राप्त होगी। इसी प्रकार मुझे यह भी जानकारी प्राप्त हुई है कि यह विश्वविद्यालय वैदिक गणित में डिप्लोमा पाठ्यक्रम का भी संचालन कर रहा है। इस दृष्टि से यह दोनों पाठ्यक्रम भारत सरकार के कौशल विकास कार्यक्रम के

अनुरूप है, जिससे छात्रों को लाभ होगा। मैं इस बात का भी उल्लेख करना चाहूँगा कि इस विश्वविद्यालय की कार्यक्रम आयोजन कुशलता को देखते हुए अगले Oriental Conference-2018 के आयोजन का अवसर भी इसे मिला है, इसके लिए मैं इस विश्वविद्यालय के प्रशासन को शुभकामनाएँ देता हूँ। इस दीक्षांत समारोह के अवसर पर एक दो दिवसीय अखिल भारतीय व्याकरण सेमिनार का प्रारंभ होने जा रहा है जो इस विश्वविद्यालय की निरंतर गतिशीलता को सूचित करता है। आज मैं इस सेमिनार का उद्घाटन करते हुए इसकी सफलता की कामना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि गुजरात की पुण्य धरती सोमनाथ तीर्थ में देश के कोने–कोने से पधारे हुए विद्वान व्याकरण के विषय पर पर्याप्त प्रकाश डालेंगे।

- आज विशेष रूप से हमें यह कहना है कि पदवी ग्रहण करने वाले छात्र एवं छात्राएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के ‘‘उपनिषद् से उपग्रह’’ तक अवधारणा में स्थित शोधयात्रा को हृदयगम करके आगे बढ़ें एवं भारत की वैज्ञानिक दृष्टि को समाज के

समक्ष लाने का प्रयास करें। साथ-साथ इन सभी शास्त्रों को अपने आचरण और व्यवहार में विवेक के साथ उतारने का प्रयास करें। ऐसा करने पर ही हमारे संसद भवन पर उल्लेखित श्लोक को हम चरितार्थ कर पाएँगे। यह श्लोक है-

''अयं निजः परो वेति, गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।''

अर्थात् यह अपना है, यह पराया है, इस प्रकार की सोच तो संकुचित लोगों की होती है। उदार चरित वालों के लिए तो इस पृथ्वी के सभी निवासी उनके कुटुंबीजन हैं। यदि यह भाव हमारे समाज में फैलेगा तो इससे भारत की एकता और अखण्डता और भी मज़बूत होगी तथा भारत का गौरव पूरे विश्व में प्रस्थापित होगा।

- उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रचार एवं प्रसार से हम अपने राष्ट्र को विश्व के नेतृत्व के लिए तैयार कर सकते हैं। मुझे संतोष है कि संस्कृत भारती एवं श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय इस कार्य को अपने नियमित अध्ययन तथा अध्यापन के साथ अतिरिक्त समय देकर भी कर रहा है।

आशा है कि यह विश्वविद्यालय अपने इस अभिगम को और भी आगे ले जाएगा।

- अंत में मैं श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय को उसके उज्जवल भविष्य के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा पदवी तथा पदक प्राप्त करनेवाले छात्र एवं छात्राओं को एक बार पुनः बधाई देकर अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

धन्यवाद । जय हिन्द ।